Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
July-December 2023 4(2), 4273–4277

COMPARATIVE STUDY OF THE EFFECTS OF THE CORONA PANDEMIC ON THE SCHOOL EDUCATION SYSTEM AND FUNCTIONING

कोरोना महामारी का विद्यालय कि शिक्षा प्रणाली एवं कार्य प्रणाली पर प्रभावों का तुलनात्मक अध्ययन

Bhavna Kumari [1], Laxmi Mishra [2]

[1] Research Student, Department of Education, IFTM University, Moradabad, India
[2] Assistant Professor, Department of Education, IFTM University, Moradabad, India

Corresponding Author
Bhavna Kumari,
drmlarya2012@gmail.com

DOI
10.29121/shodhkosh.v4.i2.2023.4940

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2023 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

ABSTRACT

English: The corona virus pandemic has affected all areas of development, but if we talk about education, it has been seriously affected. Due to the lockdown, many changes came in the lives of students, about 32 crore students missed school, college during the pandemic and they got away from educational activities. Children were disproportionately affected by the closure of schools due to COVID because not all children had the opportunity, means or access to learn during the pandemic. For millions of students, the closure of schools will not just be a temporary interruption in their education, but an abrupt end to it. The present research paper explores the effects of COVID-19 on the school education system and functioning and presents suggestions to deal with it in the future.

Hindi: कोरोना वायरस महामारी के कारण विकास के सभी क्षेत्र प्रभावित हुए है, लेकिन यदि बात शिक्षा की जाए तो यह गम्भीर रूप से प्रभावित हुआ है। लॉकडाउन के कारण छात्रों के जीवन में कई परिवर्तन आए, महामारी के दौरान लगभग 32 करोड़ छात्रों का स्कूल, कालेज छूट गए तथा वे षिक्षण गतिविधियों से दूर हो गए। कोविड के कारण स्कूलों के बंद होने से बच्चे असान रूप से प्रभावित हुए क्योंकि महामारी के दौरान सभी बच्चों के पास सीखने के लिए जरूरी अवसर, साधन या पहुँच नही थी। लाखों छात्रों के लिए स्कूलो का बंद होना उनकी शिक्षा में अस्थायी तौर पर व्यवधान भर नहीं, बल्कि अचानक से इसका अंत होगा। प्रस्तुत शोध पत्र में कोविड-19 का विद्यालय शिक्षा प्रणाली एवं कार्य प्रणाली पर प्रभावों का पता लगाना और भविष्य में इससे निपटने हेतु सुझाव प्रस्तुत किए गए है।

Keywords: Corona Pandemic, School Education System, Functioning, Lockdown
कोरोना महामारी, विद्यालय शिक्षा प्रणाली, कार्य प्रणाली, लॉकडाउन

1. प्रस्तावना

विद्यालय एक सामाजिक इकाई है। जहाँ पर सभी बच्चों को सीखने और सिखाने के लिए उपर्युक्त वातावरण की अपेक्षा हम सभी लोग करते हैं। बहुत हद तक विद्यालय इस दिषा में प्रयास करते भी हैं। बच्चों के जीवन में विद्यालय संगी-साथी, खेल की अहम भूमिका से कोई भी इनकार नहीं कर सकता है। दुर्भाग्य से लॉकडाउन के दौरान बच्चों के लिए ये अवसर बहुत सीमित हो गए थे। कुछ हद तक खत्म ही हो गए थे। वर्ष 2020 की शुरूआत से ही दुनिया भर के देषों में लोगो कोविड-19 से संक्रमित होने की खबरे आने लगी थीं। घटनाक्रम इस गीत से बदल रहा था कि विष्व स्वास्थ संगठन ने इसे 22 मार्च को महामारी घोषित कर दिया। इसके परिणामस्वरूप केन्द्र सरकार ने राष्ट्रव्यापी लॉकडाउन लगाने का फैसला लिया। भारत में अप्रैल माह

में दिल्ली समेत अधिकांष राज्यों के विद्यालयों में नए सत्र की शुरूआत खतरों को देखते हुए जल्द ही अनेक राज्यों की सरकारों ने विद्यालयों को एवं शैक्षाणिक संस्थानों को बंद करने की घोषणा की जिससे षिक्षा प्रणाली पर गहरा प्रभाव पड़ा। षिक्षा संस्थानों के बंद हो जाने के कारण षिक्षण प्रक्रिया गंभीर रूप से प्रभावित हुई, जो छात्र हर रोज विद्यालय जाकर कुछ नया सीखते थे, अपने भविष्य को लेकर चिंतित होने लगे। यह चिंता व तनाव केवल बच्चों तक ही नहीं था वरन् अभिभावक भी उनके भविष्य को लेकर तनाव में रहने लगे, छात्रों के भविष्य व उनके प्रति उनकी एवं उनके अभिभावकों के चिंता व तनाव को देखते हुए सरकार ने सभी षिक्षण संस्थानों से षिक्षा को ऑनलाइन विधि से संचालित करने की अपील की जिससे न केवल बच्चों की षिक्षा को लेकर तनाव दूर हुआ बल्कि लॉकडाउन में भी षिक्षा में निरंतरता बनी रही।

2. कोरोना महामारी का संक्षिप्त इतिहास

कोरोना महामारी दिसंबर 2019 में चीन के वाहन शहर में के कारण होने वाली बीमारी रही। शुरुआत में यह अज्ञात कारणों से निमोनिया नामक बीमारी के रूप में सामने आया, बाद में समुद्री भोजन के द्वारा जुड़ा और बीमारी का वायरस तेजी से फैला जिसके कारण विश्व स्वास्थ्य संगठन को 30 जनवरी 2020 के दिन सार्वजनिक स्वास्थ्य आपातकाल की घोषणा करनी पड़ी (विश्व स्वास्थ्य संगठन 2020)। 11 मार्च 2020 तक बढ़ते वैश्विक प्रसार ने विश्व स्वास्थ्य संगठन को आधिकारिक तौर पर इसे महामारी घोषित करने के लिए प्रेरित किया (विश्व स्वास्थ्य संगठन 2020)। श्वसन संबंधी लक्षणों की विशेषता वाले इस वायरस ने दुनिया भर में लॉकडाउन, यात्रा प्रतिबंध और स्वास्थ्य देखभाल प्रणालियों पर अभूतपूर्व दवाब डाला (ब्रिटानिका 2025)। भारत देश में इसका पहला मामला 30 जनवरी 2020 को केरल में देखने को मिला। मार्च 2020 में भारत सरकार ने इस बीमारी को फैलने से रोकने के लिए राष्ट्रीय व्यापी लॉकडाउन लगाने का फैसला लिया। विश्व भर में टिकों की दौड़ के परिणाम स्वरुप कई महत्वपूर्ण टिकों का तेजी से विकास और तैनाती हुई (न्यू क्लिनिक, 2021) वायरस के कई प्रकार सामने आए जिसमें से कुछ की संरचना एवं क्षमता बढ़ी मिली (विकिपीडिया, 12025)। महामारी ने वैश्विक मंदी सहित गंभीर सामाजिक-आर्थिक व्यवधान पैदा किये। 3 साल से अधिकतम समय की बाद विश्व स्वास्थ्य संगठन ने 5 मई 2023 को वैश्विक स्वास्थ्य आपातकालीन स्थिति की समाप्ति की घोषणा की हालांकि, वायरस का प्रसार जारी रहा (विश्व स्वास्थ्य संगठन, 2023) महामारी के कारण लाखों लोगों की मौत हुई है और कई लोगों के स्वास्थ्य पर दीर्घकालिक परिणाम हुए हैं (विकिपीडिया, 2025) ।

3. सम्बन्धित शोध साहित्य का अध्ययन

हयूमन राइट्स वॉच की सीनियर ऐजूकेषन रिसर्चर मार्टिनेज ने कहा ''महामारी के दौरान लाखों बच्चों के षिक्षा से वंचित होने के कारण अब समय आ गया है कि बेहतर और अधिक न्यायपूर्ण एवं मजबूत षिक्षा प्रणाली का पुर्निर्माण कर षिक्षा के अधिर को सुदृढ़ किया जाए। इसका उद्देष्य सिर्फ महामारी से पहले की स्थिति बहाल करना नही, बल्कि व्यवस्था की उन खामियों को दूर करना होना चाहिए जिनके कारण लंबे समय से स्कूल के दरवाजे सभी बच्चों के लिए खुले नहीं है। कोविड-19 महामारी ने वैश्विक स्कूल शिक्षा प्रणालियों में एक अभूतपूर्व व्यवधान उत्पन्न किया, जिससे दूरस्थ शिक्षा में तेजी से बदलाव की आवश्यकता हुई। साहित्य मौजूद असमानताओं के बढ़ने पर प्रकाश डालता है। पता चलता है कि छात्रों को डिजिटल संसाधनों और लगातार इंटरनेट कनेक्टिविटी तक पहुंचने में चुनौतियों का सामना करना पड़ता है (ैपदींए 2023)। एक अध्ययन के बाद यह पता चला कि स्कूल बंद होने से और ऑनलाइन शिक्षा की कठिनाइयों के कारण विभिन्न विषयों और ग्रेड स्तरों पर महत्वपूर्ण नुकसान का संकेत देते हैं (प्क्त्एद.क्)। इस महामारी ने शिक्षकों को भी प्रभावित किया है जिससे उन्हें सीमित परीक्षण और समर्थ के साथ नए शैक्षणिक दृष्टिकोण को जल्दी से अपने की आवश्यकता हुई (त्मेपए प्ण्।ण् 2023) । कुछ नवीन समाधान और बढ़ी हुई डिजिटल साक्षरता सामने आई है, साहित्य शैक्षिक समानता और गुणवत्ता पर महामारी के दीर्घकालिक परिणाम को संबोधित करने की तत्काल आवश्यकता पर जोर देता है (यूनेस्को 2020) की रिपोर्ट है कि दुनिया की 87 प्रतिषत छात्र आबादी कोविड-19 स्कूल बंद होने से प्रभावित है। यूनेस्कों दूरस्थ षिक्षा को शुरू कर रहा है और उन छात्रों तक पहुँच रहा है जो सबसे अधिक जोखिम में है।

4. शोध अध्यन की अवश्यकता

कोविड-19 ने विद्यालय शिक्षा और कार्य प्रणाली पर अपनी छाप छोड़ी है। इस अध्ययन में हम तुलना करके महामारी के विभिन्न प्रभावों, आवश्यकता और महत्व को समझेंगे। महामारी से पहले कक्षाएं पारंपरिक रूप से संचालित हुआ करती थी जहां पर शिक्षक एवं छात्र आमने-सामने संवाद करते थे, परंतु लॉकडाउन लगने के कारण स्कूल बंद हो गए और ऑनलाइन शिक्षण की आवश्यकता पड़ीजिसे देखते हुए इस कमी को पूरा करने के लिए हमें ऑनलाइन शिक्षा देनी पड़ी एवं इसे पूरा किया गया। यह बदलाव ग्रामीण व शहरी क्षेत्र, दोनों जगह देखने को मिला जहां इंटरनेट और डिजिटल संसाधन उपलब्ध होने के साथ-साथ, हमें सीखने में बाधा उत्पन्न का भी अनुभव हुआ। एक आंकड़े के अनुसार भारत में लगभग 320 मिलियन छात्रों की पढ़ाई बाधित हुई (एनसीईआरटी 2021)। ।ैम्त् 2021 रिपोर्ट के अनुसार डिजिटल असमानता का उजागर हुआ, जहां केवल 24 प्रतिशत ग्रामीण भारतीय छात्रों के पास ऑनलाइन शिक्षा तक पहुंच थी। इस शोध अध्ययन से हमें भविष्य की चुनौतियों के लिए शिक्षा नीतियों को तैयार करने में मदद मिलेगी इसलिए इसकी आवश्यकता पड़ी। प्रस्तुत शोध अध्ययन से यह पता चला है कि शिक्षा में इसका महत्व- सामानता, तकनीकी प्रगति और संकटकालीन रणनीतियों को समझने में हुआ है।

शोध अध्ययन का समस्या कथन: "कोरोना महामारी का विद्यालय शिक्षा एवं कार्य प्रणाली पर प्रभावों का तुलनात्मक अध्ययन"

5. शोध उद्देश्य

1. प्रिपरेटरी स्तर के विद्यालयों मे अध्यनरत छात्र-छात्राओं की शिक्षा प्रणाली का तुलनात्मक अध्ययन।
2. प्रिपरेटरी स्तर के विद्यालयों कमे अध्यनरत छात्र-छात्राओं की कार्य प्रणाली का तुलनात्मक अध्ययन।

शोध परिकल्पनायें: प्रस्तुत शोध अध्ययन निम्न परिकल्पनाओं पर केंद्रित है-

1. प्रिपरेटरी स्तर के विद्यालयों मे अध्यनरत छात्र-छात्राओं की शिक्षा प्रणाली में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. प्रिपरेटरी स्तर के विद्यालयों मे अध्यनरत छात्र-छात्राओं की कार्य प्रणाली में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

सीमांकन:

इस शोध अध्ययन में केवल जिला मुरादाबाद के शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों में अध्यनरत प्रिपेरटॉरी स्तर विद्यालयों के छात्र-छात्राओं को सम्मिलित किया गया है। शोध कार्य में मात्र 100 शिक्षार्थियों को ही सम्मिलित किया गया है।

शोध अध्ययन की विधि:

जनसंख्या:

जब हम शोध पत्र लिखते हैं तो हमें पता होता है कि जनसंख्या की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। जनसंख्या का अर्थ सभी इकाइयों के निरीक्षण से होता है, जो कुछ इकाइयों के चयन करने के पश्चात न्यादर्श बनने में सहायता प्रदान करता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में जिला मुरादाबाद के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के प्रिपेरटॉरी स्तर विद्यालयों में अध्यनरत छात्र-छात्राओं को जनसंख्या के रूप में माना गया है।

नयादर्श एवं न्यादर्शन विधि:

प्रस्तुत अध्ययन में प्रतिदर्श के रूप में 6 ग्रामीण एवं 6 शहरी क्षेत्र के प्रिपेरटॉरी स्तर विद्यालयों में अध्यनरत 50- 50 शिक्षार्थियों का चयन यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा प्रयोग कर चुनाव किया गया है। इसमें शहरी प्रिपेरटॉरी स्तर विद्यालय के (25 छात्र व 25 छात्राओं) एवं ग्रामीण प्रिपेरटॉरी स्तर विद्यालयों के (25 छात्र में 25 छात्राओं) शिक्षार्थियों का चयन न्यादर्श में किया गया है ।

उपकरण:

जैसा कि हम जानते हैं किसी भी शोध की समस्या का सफलतापूर्वक अध्ययन उपकरणों के चयन एवं उसके प्रशासन पर निर्भर करता है। शोध के विभिन्न चरो के मापन के लिए निम्न उपकरणों को उपयोग में लाया गया है - विद्यालय शिक्षा एवं कार्य प्रणाली पर प्रभावों (प्राथमिक डेटा संग्रह के लिए) की मापनी - स्वयं निर्मित प्रश्नावली एवं द्वितीय डेटा संग्रह के स्रोत - सरकारी आंकड़े।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी:

प्रस्तुत शोध समस्या का उद्देश्य कोरोना महामारी का विद्यालय शिक्षा एवं कार्य प्रणाली पर प्रभावों का तुलनात्मक अध्ययन करना है। शोधकर्ती द्वारा अध्ययन के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु मध्यमान, मानक विचलन और टी-परीक्षण का उपयोग किया गया है।

परिकल्पनाओ का सांख्यिकीय विश्लेषण एवं व्याख्या: प्रथम परिकल्पना - प्रिपरेटरी स्तर के विद्यालयों में अध्यनरत छात्र-छात्राओं की शिक्षा प्रणाली में कोई सार्थक अंतर नही है।

तालिका संख्या- 1

चर	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी- मान	सार्थकता स्तर
प्रिपरेटरी स्तर छात्रों की शिक्षा प्रणाली	50	19.56	2.16	7.56	शिक्षा प्रणाली में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
प्रिपरेटरी स्तर छात्राओ की शिक्षा प्रणाली	50	23.28	2.71		

तालिका 1 से स्पष्ट है कि प्रिपरेटरी स्तर के विद्यालय में अध्यनरत छात्रों की शिक्षा प्रणाली के अंकों का मध्यमान 19.56 है तथा मानक विचलन 2.16 है और प्रिपरेटरी स्तर छात्राओं की शिक्षा प्रणाली के अंकों का मध्यमान 23.28 है तथा मानक विचलन 2.71 है, दोनों वर्गों का टी अनुपात 7.56 प्राप्त हुआ है। क्रांतिक मान 98 पर तालिका मान सार्थकता स्तर .05 पर 1.96 तथा .01 पर तालिका का मान 2.63 है अतः टी का मान दोनों स्तरों पर अधिक है अतः परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। प्रिपरेटरी स्तर के विद्यालयों में अध्यनरत छात्र-छात्राओं की शिक्षा प्रणाली में सार्थक अंतर है, कहा जा सकता है कि प्रिपरेटरी स्तर के विद्यालयों में अध्यनरत छात्राओं की शिक्षा प्रणाली की अपेक्षा छात्रों की शिक्षा प्रणाली पर कोरोना महामारी का प्रभाव अधिक रहा है।

द्वितीय परिकल्पना - प्रिपरेटरी स्तर के विद्यालयों में अध्यनरत छात्र - छात्राओं की कार्यप्रणाली में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका संख्या-2

चर	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी- मान	सार्थकता स्तर
प्रिपरेटरी स्तर छात्रों की शिक्षा प्रणाली	50	6096	1.12	11.36	कार्य प्रणाली में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
प्रिपरेटरी स्तर छात्राओ की शिक्षा प्रणाली	50	9.48	1.09		

तालिका संख्या 2 से स्पष्ट है की प्रिपरेटरी स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों की कार्यप्रणालि के अंकों का माध्यम 6.96 तथा मानक विचलन 1.12 है तथा छात्राओं की कार्यप्रणालि के अंकों का मध्यमान 9.48 एवं मानक विचलन 1.98 प्राप्त हुआ है। अतः दोनों वर्गों का टी - मान 11.36 प्राप्त हुआ है। क्रांतिक मान 98 पर तालिका मान सर्थकता स्तर .05 पर 1.96 तथा .01 पर 2.63 है, अतः टी मान दोनों स्तरों पर अधिक है, अतः परिकल्पना अस्वीकृति की जाती है। प्रिपरेटरी स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं की कार्यप्रणाली में सार्थक अंतर है। कहां जा सकता है की प्रिपरेटरी स्तर के विद्यालयों में अध्यनरत छात्राओं की कार्य प्रणाली की अपेक्षा छात्रों की कार्यप्रणाली पर कोरोना महामारी का प्रभाव अधिक रहा है।

6. निष्कर्ष: निर्मित परिकल्पनाओं के अनुसार जो निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं वे इस प्रकार हैं-

1) प्रस्तुत शोध अध्ययन की प्रथम परिकल्पना शून्य परिकल्पना के रूप में बनाई गई थी। प्रिपरेटरी स्तर के विद्यालयों में अध्यनरत छात्र-छात्राओं की शिक्षा प्रणाली में सार्थक अंतर नहीं है। शोध अध्ययन से विदित हुआ है कि प्रिपरेटरी स्तर के विद्यालयों में अध्यनरत छात्र- छात्राओं की शिक्षा प्रणाली में सार्थक अंतर पाया गया है, अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत कर दी गई है। जिसके आधार पर निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि छात्राओं की शिक्षा प्रणाली की अपेक्षा छात्रों की शिक्षा प्रणाली पर कोरोना महामारी का प्रभाव अधिक रहा है।

2) प्रस्तुत शोध अध्ययन की द्वितीय परिकल्पना शून्य परिकल्पना के रूप में बनाई गई थी प्रिपेरटॉरी स्टार के विद्यालयों में अध्यनरत छात्र-छात्राओं की कार्य प्रणाली में सार्थक अंतर नहीं है शोध अध्ययन से विद्युत हुआ है कि प्रिपेरटॉरी स्टार के विद्यालयों में अध्यनरत छात्र-छात्राओं की कार्य प्रणाली में सार्थक अंतर पाया गया है अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत कर दी गई है जिसके आधार पर निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि छात्राओं की कार्यप्रणाली की अपेक्षा छात्रों की कार्य प्रणाली पर कोरोना महामारी का प्रभाव अधिक रहा है।

भावी शोध अध्यन हेतु सुझावः महामारी के कारण स्कूलों के बन्द होने से छात्र असमान रूप से प्रभावित हुए, क्योंकि महामारी के दौरान बच्चों के पास सीखने के लिए जरूरी अवसर व साधनों की पहुँच नही थी सरकारों के पास ऑनलाइन षिक्षा शुरू करने के लिए ऐसी नीतियों व संसाधनो व बुनियादी ढ़ाँचे की कमी है जिससे सभी बच्चे समान रूप से षिक्षा हासिल कर सके, जिसके लिए प्रयास किया जाना चाहिए। सरकार को अपने षिक्षा के बजट को संरक्षित करने एवं उसे बढ़ाने की आवष्यकता है। सरकार को चाहिए कि वह सभी ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट की सुविधाएँ उपलब्ध कराए जिससे यदि भविष्य में फिर से ऐसी कोई महामारी आती है तो षिक्षा को ऑनलाइन षिक्षा के माध्यम से सुचारू रूप से संचालित कराया जा सकें। सभी ग्रामीण एवं ऐसे परिवार जो गरीब है उनके बच्चों को मुफ्त स्मार्ट फोन, टेबलेट व लेपटॉप उपलब्ध कराया जाए, ताकि बच्चों की षिक्षा बाधित न हो और ऑनलाइन रूप से सुचारू रूप से संचालित की जा सके। समय-समय पर सभी देषवासियों को महामारी का टीकाकरण लगाया जाए। प्राथमिक विद्यालयों में बच्चो को पोष्टिक आहार वितरित किया जाए। वर्तमान भारतीय षिक्षा प्रणाल खराब अवसंरचना एवं सुविधाओं से जूझ रही है, इसलिए आवष्यक है कि सरकार देष के षिक्षा क्षेत्र का अवसंरचना मे सुधार करने के लिए यथासम्भव प्रयास करें जिससे छात्रों में गुणवत्तापूर्ण षिक्षा प्राप्त हो सकें।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

अजीम प्रेमजी फाउंडेशन (2021). कोविड-19 महामारी के दौरान सीखने में क्षति, अजीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी, बेंगलुरु।

रिसर्चगेट (2020). कोरोना वायरस का शिक्षा पर प्रभाव।

यूनेस्को (2020). शिक्षा पर कोविड-19 का प्रभाव।

यूनेस्को (2021), कोविड-19 के दौरान शिक्षा, भारत केस स्टडी।

Al-Samarai, S, Ganguras, M. +Gala, P (2020) the impact of the covid-19 pandemic on Education Financing world Bank other operational studies 33739, the world bank.

Chick, R.C. (2020) using technology to maintain the Education of Residents during the COVID-19 Pandemic Journal of Surgical Education, 77,729-732.

Editors (2020) History A&E Television Networks. LLC https//www.history.com/topics/niddle-ages/pandemics-timeline.

Kids under pressure Accessed march 25, 2022. https://challengessuccess.org/wp-content/uploads/2021/02/cs-NVC-study-kidsunder-pressure-publised.pdf

MHRD notice (2020) Covi-19 stay safe-digital initiatives, retrieved from https.//www.mohfw.gov.inPdf/covid-19Pdf.
MHRD notice (2020) covid-19 stay safe-digital initiatives, retrieved from https://www.mohfw.gov.in/PdF/covid-19Pdf.
MoHFW, India (2020). "COVID-19 Containment Guidelines"
WHO (2020) WHO corona virus (Covid-19) dashboard world health organization covid-19 who int.
WHO (2022) WHO corona virus (covid-19) dashboard world Health organization covid-19 who int.
UNICEF (2020). Education during COVID-19 in India